वैदिक वाङ्मय में वनस्पति विज्ञान का स्वरूप

Dilip Kumar Mishra

Depoartment of Veda, Banaras Hindu University, Varanasi-5

Abstract

There is ample of evidence for presence of botany in the Vedas, Brahmins and Sutra. The massive growth of Vanaspati are enumerated in vedas. Eitaraiya and Koshitaki Brahmins highlight the very basic facts that Vanaspatis are the source of life. They facilitate Prana Vayu (Oxygen) for the life.

Vanaspatis are cruial, anti-poisonous and anti-pollutant. They have been referred to as 'Visdushani' in Vedic mantras. In the Shatapatha Brahmin's medium, 'Oshadhi' is derived from Sanskrit word 'Osha' meaning 'disease' and 'Dhi' meaning 'cure'. The Rigveda says that the immortal conflagration in the form of soul is vibrant in the Vanaspati. This paper will discuss about the importance of botany in Vedas.

वनस्पति-विज्ञान का बृहत् स्वरूप हमारे मूल ग्रन्थों अर्थात् वैदिक वाङ्मय में अनेक स्थानों पर वर्णित है। वेदों के सहायक ग्रन्थ जैसे ब्राह्मण, सूत्र (गृह्य एवं श्रौत), उपनिषद् आदि इनमें वनस्पति-विज्ञान के प्रतिपाद्य विषय को विस्तृत रूप से बताया गया है। वैदिक वाङ्मय में प्रतिपादित वनस्पतियों के स्वरूप, उनका उपयोग एवं महत्व, पौधों में ओषधि तत्त्व, वृक्षादि में चेतनतत्त्व और वृक्षों का वर्गीकरण एवं उनका संरक्षण भी विशेष प्रकार से वर्णित है।

वृक्ष-वनस्पतियों की उपयोगिता

ऋग्, यजु और अथर्ववेद में वृक्ष-वनस्पतियों को मानव के रक्षक, पोषक और माता-पिता का दर्जा प्राप्त है। इसके अलावा वृक्ष-वनस्पति केवल प्राणवायु के ही साधन नहीं है, अपितु उनके पाँच अङ्गों को भी उपयोगी बताया गया है। वे हैं-मूल (जड़), स्कन्ध शाखा (तना एवं शाखाएँ), पत्र (पत्ते), पुष्प (फूल) और फल। काष्ठ प्राप्ति की ये एकमात्र साधन है।

ऋग्वेद[१] तथा यजुर्वेद[२] में एक पूरा सूक्त ही ओषधियों के महत्व को प्रतिपादित करता है। इस सूक्त में उन्हें माता की तरह मानव की रक्षा करने के कारण 'मातरः' तथा इनका संग्रह करने वाले को वैद्य कहते हैं। ओषधियाँ मनुष्य (द्विपाद्) और पशु (चतुष्पाद) सबको नीरोगता प्रदान करती है। ओषधियाँ शरीर को ऊर्जा, शक्ति और उत्साह देती हैं, जिससे मनुष्य का शरीर और मन ओजस्वी, वर्चस्वी और प्रफुल्लित रहता है। ओषधियाँ शरीर के सामर्थ्य को अक्षुण्ण बनाए रखती हैं।

वेदों, ब्राह्मणग्रन्थों, उपनिषदों आदि में वर्णित वृक्ष-वनस्पतियों आदि की संख्या इस प्रकार है-१.ऋग्वेद (६७), २.यजुर्वेद (८२), ३. अथर्ववेद (२८८), ४.ब्राह्मण ग्रन्थ (१२९), ५.उपनिषदें (३९), ६.कल्प-सूत्र (५११), ७.पाणिनिकृत अष्टाध्यायी एवं उसके वार्तिक (१८३), ८. पतंजलिकृत महाभाष्य (१०९), यास्कवृत निरुक्त (२६)।[३]

वृक्ष-वनस्पतियों का महत्त्व

ऐतरेय और कौषीतकि ब्राह्मण में वनस्पतियों को 'प्राण' संज्ञा दी गई है,[४] क्योंकि ये प्राणशक्ति (आक्सीजन) देती हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण को दूर करते है, अतः उन्हें 'शमिता' (शमनकर्ता) कहा गया है।[५] कौषीतकि ब्राह्मण में वनस्पतियों को परमात्मा का उग्र रूप बताया गया है, ये अपने उग्र रूप के कारण रोग, रोगाणु आदि को नष्ट करते हैं।[६] ये एक ओर रक्षक है, दूसरी और संहारक भी है।

कौषीतकि ब्राह्मण में कहा गया है कि-वृक्ष-वनस्पति वहीं हैं, जिनमें शक्तिवर्धन, शक्ति प्रदान और ऊर्जा देने की क्षमता हो। इसके लिए 'पयोभाजन' शब्द दिया गया है, जिसका अभिप्राय है-शक्तिप्रदान की क्षमता।[७] अथर्ववेद में भी कहा गया है कि वृक्ष-वनस्पति मनुष्यमात्र को जीवनशक्ति देते हैं, तथा ये विष-नाशक हैं, प्रदूषण को नष्ट करते हैं। इसके लिए मंत्र में 'विषदूषणी' संज्ञा दी गई है।

वेद के अनेक मंत्रों में ओषधि रूपी सोम रस का तो इतना अधिक महत्व है कि उस सोमरस का पान कर इन्द्र ने वृत्र जैसे शक्तिशाली राक्षस का वध किया। यह सोमरस शक्तिवर्धक तथा रोग निवारक ओषधि है यह देवता को शक्ति प्रदान करने वाला

Vijnana Bharati

है। जिसका पान कर देवता गण शक्ति को प्राप्त करते हैं।

ओषधि का अर्थ

वैदिक वाङ्मय में ओषधि शब्द का व्यापक अर्थ में प्रयोग हुआ है। इसमें सभी प्रकार के वृक्ष-वनस्पति आ जाते हैं। ओषधि की सामान्य व्याख्या है-'ओषधयः फलपाकान्ताः।' जिनके फल पकते हैं। सायण के अनुसार 'ओषः पाकः फलपाकः यासु धीयते इति ओषधयः', अर्थात् जिनके फल पकते हैं, उन्हें ओषधि कहते हैं।

यास्क ने इसकी निरुक्ति दी है कि जो शरीर में ऊर्जा उत्पन्न करके उसे धारण करती हैं या जो दोष, प्रदूषण आदि को दूर करती हैं।[९]

शतपथ ब्राह्मण में ओषधि शब्द का अर्थ ही यह दिया गया है कि जो 'ओष' (दोष) को धि (पी ले, समाप्त कर दें) अर्थात् जो दोषों का नाश कर दें।[१०]

ओषधियों के भेद

ओषधियों के मुख्य रूप से दो भेद हैं-वनस्पति और ओषधि। वृक्षों के लिए वनस्पति शब्द है और छोटे पौधों के लिए ओषधि शब्द। वनस्पति के भी दो भेद हैं- वनस्पति और वानस्पत्य। बड़े वृक्षों के लिए वनस्पति शब्द है और अपेक्षाकृत छोटे वृक्षों के लिए वानस्पत्य शब्द है। इसी प्रकार ओषधि के भी दो भेद किए गए हैं- ओषधि और वीरुध्। छोटे पौधे के रूप में होने वाले को ओषधि (Herbs) और लता, गुल्म (झाड़ी) आदि के रूप में होने वालों को वीरुध् (Creepers) कहा गया है। अथर्ववेद में इन चारों भेदों के उल्लेख[११] के अलावा एक मन्त्र में ओषधि और वीरुध् के साथ तृण[१२] (Grass) का भी उल्लेख है। इस प्रकार चार के स्थान पर पाँच ओषधियों के भेद हो जाते हैं।

अथर्ववेद के एक मंत्र में वीरुध् के पाँच राज्यों (प्रमुख वर्गों) का वर्णन है। ये हैं- १. सोम, २. दर्भ (कुश), ३. भंग (भांग), ४. यव (जौ), ५. सहस् (शक्तिवर्धक चावल)।[१३]

ओषधियों का वर्गीकरण

(१) रंग के आधार पर : ओषधियों का पौधों के रंग के आधार पर वर्गीकरण निम्नवत् है- (क) वभ्रु (भूरे रंगवाली), (ख) शुक्र (सफेद रंग की), (ग) रोहिणी (लाल रंग की), (घ) पृश्नि (चितकबरी), (ङ) असिक्नी (श्यामवर्ण की), (च) कृष्णा (काले रंग की)।[१४]

(२) स्वरूप या आकार-प्रकार के आधार पर : (क) प्रस्तुणती (चारों ओर फैलने वाली), (ख) स्तम्बिनी (गुच्छोंवाली या झाड़ीदार), (ग) एक शुंगा (एक खोल वाली), (घ) प्रतन्वरी (बहुत फैलने वाली), (ङ) अंशुमती (रेशे या किल्ले फूटते हैं)।[१५]

(३) गुण-धर्म के आधार पर : (क) जीवला (जीवनदायिनी), (ख) नधारिषा (हानि न करने वाली), (ग) अरुन्धती (घावों को भरने वाली), (घ) उन्नयन्ती (शक्तिप्रद), (ङ) मधुमती (मधुर मीठी), (च) प्रचेतम् (चेतना देने वाली), (छ) मेदिनी (पुष्टिकारक), (ज) उग्रा (तीव्र प्रभाव वाली), (झ) विषदूषणी (विषनाशक), (ञ) बलासनाशनी (कफनाशक या कैंसर को नष्ट करने वाली)।[१६]

(४) फल आदि के आधार पर : (क) पुष्पवती (फूलों वाली), (ख) प्रसूमती (कली या अंकुरों वाली), (ग) फलिनी (फलवाली), (घ) अफला, (ङ) अपुष्पा (फूलरहित) और (च) पुष्पिणी (फूलों वाली)।[१८]

ओषधियों के उत्पत्ति स्थान

वेद के अनेक मन्त्रों में ओषधियों के उत्पत्ति स्थान का वर्णन मिलता है।[१९]

१. कुछ ओषधियाँ पर्वतों पर होती है, कुछ ओषधियाँ शैवाल (काई) से उत्पन्न होती है।

२. कुछ ओषधियाँ नदी, तालाब आदि में उत्पन्न होती हैं।

३. कुछ ओषधियाँ समुद्र के अन्दर भी पाई जाती है।

४. कुछ ओषधियाँ भूमि खोदकर प्राप्त की जाती है।

५. कुछ ओषधियाँ प्राणिज हैं, जो जीवों के सींग, इत्यादि से प्राप्त होती हैं। सबसे अधिक मात्रा में ओषधियाँ समतल भूमि जिसमें किसान कृषि कार्य करके, ब्रीहि, यवादि अन्न के रूप में उत्पन्न करता है से प्राप्त होती है।

कुछ ओषधियाँ इन रूपों में प्राप्त होती हैं-

१. प्राकृतिक ओषधियाँ - सूर्य, चन्द्र, वायु, अग्नि, जल, मिट्टी आदि।

२. उद्भिज्ज या औद्भिद - पृथिवी को फाड़कर निकलने वाले वृक्ष-वनस्पति, ओषधियाँ आदि।

३. खनिज द्रव्य - अंजन, सुवर्ण, रजत, सीसा आदि।

४. प्राणिज द्रव्य - मृग की सींग आदि।

Vijnana Bharati

५. समुद्रज या समुद्रिय – शंख आदि।

अतएव ऋग्वेद और यजुर्वेद में कहा गया है कि वृक्ष-वनस्पतियाँ मानवसृष्टि से तीन युग पहले उत्पन्न हुई थीं और इनके उत्पत्तिस्थान सैकड़ों ही नहीं, अपितु सहस्रों स्थान हैं।[२०]

वृक्षों की हरियाली का कारण अवितत्त्व (क्लोरोफील)

अथर्ववेद के एक मंत्र में बताया गया है कि वृक्षों में हरियाली का कारण अवितत्त्व है। अवि का अर्थ है-रक्षक तत्त्व। यह वृक्ष की रक्षा करता है और उसका पोषण करता है। मंत्र में कहा गया है कि यह अवितत्त्व ऋत से घिरा हुआ है। इसके कारण ही वृक्ष-वनस्पतियाँ हरे रंग के होते हैं।

वृक्ष-वनस्पतियों के उपकारक तत्त्व

अथर्ववेद में वृक्षादि के पाँच उपकारक तत्त्वों का वर्णन आया है। यथा १. पर्जन्य (मेघ), २. मित्र (प्राणवायु), ३. वरुण (जल), ४. चन्द्र (चन्द्रमा), ५. सूर्य। इन पाँचों को 'शतवृष्णय' अर्थात् सैकड़ों शक्ति से युक्त कहा गया है।

पर्जन्य (मेघ) और पृथिवी

अथर्ववेद में कहा गया कि मेघ (पर्जन्य) इनका पिता और भूमि इनकी माता है। मेघ को 'भूरिधायस्' अर्थात् अनेक प्रकार से पोषक, और पृथिवी को माता कहते हुए 'भूरिवर्पस्' अर्थात् अनेक रूपों वाली, संज्ञा दी गई है। मेघ पिता के तुल्य वृक्षादि का पालन करते हैं और पृथिवी माता के तुल्य उनका संवर्धन, पोषण और रक्षण करती है।[२१]

सोम (चन्द्रमा)

वेदों में सोम को ओषधियों का राजा बताया गया है। सोम को वनस्पतियों का पालक और पोषक कहा गया है। यह वनस्पतियों को हरियाली और मधुरता देता है। सोम शक्ति, बल, तीव्र गति, सुन्दरता और कान्ति देता है। यह वृक्ष-वनस्पतियों के केन्द्र में रहता है।[२२]

सूर्य

ऋग्वेद में बताया गया है कि सूर्य की किरणों से प्रकाश-संश्लेषणा प्रक्रिया का संकेत मिलता है। मंत्र का कथन है कि वृक्ष सूर्य की सात रंग की किरणों से शक्तिप्रद ऊर्जा प्राप्त करते हैं। एक अन्य मंत्र में बताया गया है कि सूर्य के कारण ही सभी प्रकार वृक्ष-वनस्पतियों में पाक क्रिया होती है तथा अपनी ऊष्मा से फलों आदि में मधुरता उत्पन्न करता है और फल-फूल की वृद्धि करता है।[२३]

अग्नि

अग्नि वनस्पतियों का स्वामी है।[२४] ऋग्वेद का कथन है कि वृक्ष-वनस्पति अग्नि को अपने गर्भ में धारण करते हैं। अग्नि ने ही ओषधियों में चेतना दी है और विविध रूप वाले तथा सौभाग्यशाली वनों को जन्म दिया है।[२५]

अन्नों में प्राण और अपान तत्त्व

वेदों में अन्नों का विभाजन प्राण और अपान तत्त्वों के आधार पर किया गया है। जिनमें आग्नेय तत्त्व (आक्सीजन) अधिक है, उन्हें प्राण-शक्तियुक्त या प्राणबहुत कहा है तथा जिनमें सोमीय तत्त्व (हाइड्रोजन) अधिक है, उन्हें अपानशक्तियुक्त कहा गया है। वेदों में विटामिन के स्थान पर प्राण-अपान नाम दिए गए हैं।[२६]

वृक्षों में चेतनतत्त्व

वृक्षों में जीवनीशक्ति, चेतनता या जीव हैं या नहीं, यह अत्यन्त विवादास्पद विषय है। इस विषय में प्राप्त विवरण इस प्रकार हैं :

अथर्ववेद के अनुसार महत् ब्रह्म (आत्मा) की सत्ता के कारण ही वीरुध् (वृक्ष-वनस्पतियाँ) साँस लेते हैं। एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि वृक्ष खड़े-खड़े सोते हैं। एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि वृक्षों में चेतनता है, अतः उनके घाव साल भर में भर जाते हैं।[२७]

ऋग्वेद का कथन है कि वह अमर अग्नि (आत्मा) ओषधियों (वृक्ष-वनस्पतियों) में प्रकाशित हो रहा है।[२८]

बृहदारण्यक् उपनिषद् में मनुष्य और वृक्ष की समानता का वर्णन करते हुए कहा गया है कि वृक्ष-वनस्पति भी मनुष्य के समान है। पुरुष के लोम (बाल) हैं, वृक्षों के पत्ते हैं, दोनों के शरीर पर त्वचा है। त्वचा कटने पर खून निकलता है, वृक्ष की भी त्वचा से रस निकलता है। मनुष्य के शरीर में माँस है, वृक्षा में शर्करा (खाँड़)। मानवशरीर में हड्डी हैं, वृक्ष में लकड़ी। दोनों के घाव भर जाते हैं।[२९]

वृक्षों में रस का संचार होता है, इसका संकेत वैशेषिक दर्शन में मिलता है। भागवत पुराण में भी वृक्षों में जल का नीचे से ऊपर जाना वर्णित है।[३०]

एक अन्य ग्रन्थ में भी मनुष्य और वनस्पति के जीवन का सादृश्य दिखाया गया है। जैसे मनुष्य-शरीर का पोषण माँ के दूध, भोजन आदि से होता है, उसी प्रकार वनस्पतियों का पोषण

Vijnana Bharati

भूमि के जल, आहार आदि से होता है। जिस प्रकार उचित और अनुचित आहार से मनुष्य शरीर की वृद्धि या हानि होती है, उसी प्रकार वनस्पति शरीर की भी।[३१]

उपसंहार

वैदिक वाङ्मय में वनों और वृक्षों के संरक्षण पर बहुत अधिक बल दिया गया है। यजुर्वेद का कथन है कि वृक्ष-वनस्पतियों को न काटो। इनको जल से सींचित कर पुष्ट करो। ऋग्वेद में वृक्षों को प्रदूषण-नाशक बताया गया है।

यजुर्वेद में वृक्ष-वनस्पतियों से होने वाले लाभों के बारे में मुख्यतया उनके जीवनरक्षक स्वरूप प्राणवायु उत्सर्जन एवं उनसे प्राप्त होने वाले मधुर फल, वर्षा करने में सहायता तथा पृथ्वी की दृढ़ता इत्यादि का वर्णन है। ऋग्वेद के अनुसार वृक्ष-वनस्पति हमारे रक्षक हैं एवं ये दोनों एक-दूसरे से सम्बद्ध है। दोनों एक-दूसरे के उपकारक हैं।

ऋग्वेद में मानव के रक्षक के रूप में वन, वृक्ष ओषधियों और पर्वतों का उल्लेख किया गया है तथा उन्हें सृष्टि के लिए 'नि:षिध्वरी' (उपकारक) बताया गया है। शतपथ ब्राह्मण में ओषधियों को शिवरूप बताया गया है। यजुर्वेद के रुद्राध्याय में शिव को वृक्ष-वनस्पतियों का स्वामी बताया गया है तथा उनके शिवत्व के अनुसार ये कार्बन डाई-आक्साइड रूपी विष को पीकर आक्सीजन रूपी अमृत (प्राणवायु) छोड़ते हैं, परन्तु उनके द्वितीय पक्ष रुद्र रूप अर्थात् संसार का नाशक और संहारक के अनुसार मनुष्य वृक्ष-वनस्पतियों का अपक्षय और उनकी प्रचुरता को कम करके स्वयं अपने जीवनरक्षक तत्त्व प्राणवायु को समाप्त कर अपने विनाश का आमन्त्रण दे रहा है।

सन्दर्भ :

१. ऋग्वेद ०.१७.१-२३।

२. यजुर्वेद १२.७५-१०१।

३. आचार्य प्रियव्रत शर्माकृत, द्रव्यगुणविज्ञान, भाग ४, पृ.२००-२१६।

४. कौषीतकि ब्राह्मण - १२.७ एवं ऐतरेय ब्राह्मण - २.४ और १०।

५. यजुर्वेद - २९.३४।

६. कौषीतकि ब्राह्मण - ६.५।

७. वही, १०.६।

८. अथर्ववेद - ८.७.१०।

९. निरुक्त - ९.२७।

१०. शतपथ ब्राह्मण - २.२.४.५।

११. अथर्ववेद - ८.८.१४।

१२. वही, ११.७.२१।

१३. वही, ११.६.१५।

१४. वही, ८.७.१।

१५. वही, ८.७.४।

१६. वही, ८.७.६-१०।

१७. वही, ८.७.२७।

१८. ऋग्वेद - १०.९५.१५ एवं यजुर्वेद - १२.८९।

१९. अथर्ववेद - २.३.१, ८.७.१७, ८.७.९, ७.८.९, २.३.४, २.३.३, २.३.५, ३.७.१।

२०. ऋग्वेद - १०.९१.१-२ एवं यजुर्वेद - १२.७५-७६।

२१. अथर्ववेद १.२.१, १.३.१-५।

२२. ऋग्वेद - ९.५.१०, ९.११.३, ९.६५.१८।

२३. वही, ८.७२.१६, १०.८८.१० एवं यजुर्वेद - ६.२।

२४. अथर्ववेद - ५.२४.२।

२५. ऋग्वेद - ७.४.५, १०.९१.६, १.९८.२, ६.१२.३, ३.१.१३।

२६. अथर्ववेद - ११.४.१३, ८.७.२०, ८.२.१९।

२७. वही, १.३२.१, ६.४४.१, १८.२.७, ८.१०.१८।

२८. ऋग्वेद - ६.१२.३।

२९. बृहदारण्यक उपनिषद् - ३.९.२८।

३०. भागवत पुराण - ३.१०.२०।

३१. गुणरत्न कृत षड्दर्शनसमुच्चय।

Vijnana Bharati